साभार: मल्लिका दत्त

मल्लिका दत्त

मानवाधिकारों के लिए अनूठी पहल

स्मिता जैन

व्यावसायिक कंपनियों के विस्तार के दौर में भारत में अमेरिकी कंपनियों के सहयोगी कार्यालयों और अमेरिका में भारतीय कंपनियों के सहयोगी कार्यालयों की शुरुआत आम बात है। कई महाद्वीपों में समाज सेवा के काम में लगे स्वंयसेवी संगठन भी अब इस क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। ऐसा ही एक संगठन ब्रेकथ्रू न्यू यॉर्क और नई दिल्ली स्थित अपने कार्यालयों के माध्यम से वैश्विक मानवाधिकारों को प्रोत्साहित करने का काम कर रहा है। इस संगठन की संस्थापक हैं 45 वर्षीय मल्लिका दत्त।

सुश्री दत्त कहती हैं, ''अमेरिका और भारत संसार के दो सबसे बड़े लोकतंत्र हैं और यहां रहने वालों में बहुत विविधता है। मेरी रुचि इन दोनों देशों में है और मैं मानती हूं कि अगर मानवाधिकारों को संरक्षित और प्रोत्साहित किया जाना है तो यह काम भारत और अमेरिका में होना ज़रूरी है।'' मल्लिका अपने न्यूयॉर्क कार्यालय से काम करती हैं और हर साल चार महीने भारत में बिताती हैं। वह कहती हैं, ''व्यक्तिगत तौर पर मेरी अमेरिका और भारत में इसलिए भी दिलचस्पी है कि भारतीय अमेरिकी के बतौर मेरी दोहरी पहचान है।''

उन्होंने मीडिया, शिक्षा और लोकप्रिय संस्कृति के माध्यम से मानवाधिकारों को प्रोत्साहित करने के लिए ब्रेकथ्रू की स्थापना वर्ष 1999 में की थी। यह संगठन स्त्रियों के अधिकारों, लैंगिक और प्रजनन अधिकारों, आप्रवासी अधिकारों, नस्लीय और जातीय समानता को प्रोत्साहित करने के लिए काम करता है।

भारत में लोकप्रिय मनोरंजन जन जन तक पहुंच पाने का बहुत प्रभावी साधन सिद्ध हुआ है। वर्ष 2000 में ब्रेकथ्रू द्वारा निर्मित 'मन के मंजीरे: एन एल्बम ऑफ़ वीमेन्स ड्रीम्स' (वर्जिन रिकॉर्ड्स) पांच महीने तक सर्वाधिक बिक्री वाले एल्बमों में शीर्ष पर रहा। दुर्व्यवहार करने वाले पति को छोड़कर ट्रक ड्राइवर बनी एक स्त्री की सच्ची कहानी पर आधारित शुभा मुद्गल के गाए इसके शीर्षक गीत को वर्ष 2001 में बैस्ट इंडिपॉप म्यूज़िक वीडियो का स्क्रीन अवार्ड मिला और यह एमटीवी म्यूज़िक अवार्ड के लिए भी नामांकित हुआ। हाल ही में ब्रेकथ्रू के एचआईवी/एड्स अभियान ''व्हाट काइंड ऑफ़ ए मैन आर यू?'' ने एक विवादास्पद मुद्दे को बहुत संवेदनशील ढंग से उठाकर पूरे देश का ध्यान खींचा है– भारत में अधिकाधिक संख्या में पत्नियां अपने पतियों से एचआईवी संक्रमण पा रही हैं। इस अभियान ने एड्स के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मुख्य धारा के मीडिया का अभूतपूर्व उपयोग किया है।

सुश्री दत्त भारत के शीर्षस्थ मीडिया संस्थानों से मिले सहयोग के बारे में बताती हैं, ''मुख्यधारा के मनोरंजन उद्योग के बड़े नामों और मीडिया से हमारी साझेदारी अद्भुत है। 'व्हाट काइंड ऑफ़ ए मैन आर यू?' का ही मामला देखिए, मैकन एरिकसन इंडिया (न्यूयॉर्क स्थित मुख्य विज्ञापन एजेंसी की भारतीय शाखा) ने हमारे अभियान को जन सेवा के मद्देनजर नि:शुल्क तैयार किया। हमने इसे मदद के तौर पर मिले स्थान और समय के आधार पर टेलीविज़न, रेडियो, अखबारों-पत्रिकाओं और इंटरनेट के माध्यम से इसे व्यापक स्तर पर प्रसारित किया। देशभर में 21 से अधिक टेलीविज़न चैनल, 15 अखबारों और पत्रिकाओं, पांच रेडियो चैनल और 6 मल्टीप्लैक्स सात भाषाओं

में इस अभियान के प्रसार में हमारे साथ जुड़े।''

भारत में ब्रेकथ्रू के कार्यक्रम जहां लोकप्रिय माध्यमों से स्त्रियों के अधिकारों को प्रोत्साहन देने पर केंद्रित हैं, वहीं अमेरिका में वह सार्वजनिक संवादों के माध्यम से जातीय न्याय और आप्रवासियों के अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाते हैं। सुश्री दत्त बताती हैं, ''अमेरिका में काम करने का हमारा ढंग अलग है क्योंकि वहां मुख्यधारा मनोरंजन उद्योग से साझेदारी कठिन काम है। वहां हमने अपने संगठन के संसाधनों पर निर्भर रहते हुए ही काम किया है और उसके प्रसारण के लिए इंटरनेट और नई संचार माध्यम वितरण रणनीतियों का सहारा लिया है। हमने अमेरिका में भी बड़े मानवाधिकार जनमंच आयोजित किए हैं।'' सितंबर 2006 में ब्रेकथ्रू ने न्यूयॉर्क में ''व्हाइ कांट अमेरिका हैव ह्यूमन राइट्स?'' शीर्षक से अमेरिका में मानवाधिकार आंदोलन के महत्व की चर्चा करने के लिए एक सार्वजनिक विमर्श का आयोजन किया। 70 संगठनों द्वारा सह-प्रायोजित इस कार्यक्रम में अमेरिका भर से 600 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें छात्र, सामाजिक न्याय आंदोलनों के अगुआ और कलाकार भी शामिल थे। वक्ताओं में अग्रणी नाम थे एम्नेस्टी इंटरनेशनल यूएसए के कार्यकारी निदेशक लैरी कॉक्स और

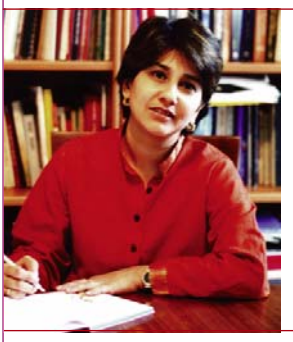

साभार: मल्लिका दत्त

ब्रेकथ्रू ने मानवाधिकारों के बारे में ऐसे तौरतरीके अपनाए हैं जो पुरातनपंथी ढर्रों को चुनौती देते हैं।

अमेरिकन राइट्स एट वर्क की संस्थापक कार्यकारी निदेशक मैरी बेथ मैक्सवेल।

ब्रेकथ्रू के तौरतरीकों ने अमेरिकी राष्ट्रपतियों को भी प्रभावित किया है। मानवाधिकारों का सम्मान करनेवाली न्यायपूर्ण आप्रवासन नीतियों से अमेरिका को होने वाले लाभों को दिखाने के लिए शुरू किया गया अभियान ''वैल्यू फ़ैमिलीज़'' उन दस अभियानों में से एक था जिन्हें सितंबर 2006 में दूसरे वार्षिक क्लिंटन ग्लोबल इनिशिएटिव के लिए चुना गया। सुश्री दत्त को पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने प्रतिबद्धता प्रमाणपत्र भी दिया। ''वैल्यू फ़ैमिलीज़ को राष्ट्रपति क्लिंटन से प्राप्त यह सम्मान बहुत महत्वपूर्ण है और व्यापार और मनोरंजन उद्योग से संपर्क करने में हमारे लिए सहायक सिद्ध होगा।'' वह कहती हैं, ''अमेरिका में मानवाधिकारों को फलने-फूलने देने के लिए मजबूत गठबंधन बनाना ज़रूरी हैं।'' उनका अभियान मल्टीमीडिया और जनशिक्षण कार्यशालाओं के माध्यम से आप्रवासियों के प्रति भय और उग्रता के भावों को कम करने का प्रयास करते हुए जन संवाद शुरू करता है जो न्यायपूर्ण आप्रवासन नीतियों को प्रोत्साहित करता है। भारत और अमेरिका में लोकप्रिय संस्कृति और सार्वजनिक नीतियों के बीच सेतु रचता ब्रेकथ्रू मानवाधिकारों के बारे में एक अनूठी पहल कर रहा है और पुरातनपंथी विचारों को चुनौती, मौजूदा सामाजिक परंपराओं की पड़ताल करते हुए लोगों, समुदायों और राष्ट्रों के एक-दूसरे से संवाद के तौरतरीकों को प्रभावित कर रहा है।

स्मिता जैन *दिल्ली स्थित स्वतंत्र अमेरिकी पत्रकार हैं। कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजें।*